वैभव से बड़ा ... महान त्याग

- ब्र.कु. मधु,भोपाल,म.प्र.

आम तौर पर मानव का स्वभाव उसे वैभव प्राप्ति हेतु लालायित करता है। हर व्यक्ति अधिक से अधिक वैभव सम्पन्न बनना चाहता है। नि:संदेह व्यक्ति को वैभव से सम्मान मिलता है, किन्तु वैभव प्राप्त करना मानव जीवन की अंतिम परिणति नहीं है। यदि वैभव प्राप्त करने से सम्मान मिलता है तो त्याग से लोगों में उसके प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न होता है।

कहते हैं, बिना कुछ गंवाये कुछ नहीं मिल सकता। बिना त्याग भाग्य कहाँ बनता है! ऐसे ही अगर हम इतिहास के पन्नों को पलट कर देखें तो जो भी महान व दिव्य पुरुष बने, उन्होंने कहीं न कहीं कुछ छोड़ा तब कुछ पाया। ऐसे ही जब कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के घर सिद्धार्थ का जन्म हुआ तो अनेक ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी, कि यह बालक चक्रवर्ती सम्राट बनेगा, किन्तु इसके विपरीत एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक महान् उपदेशक बनेगा। इस ज्योतिषी की भविष्यवाणी को विफल करने के लिए राजा शुद्धोधन ने बालक सिद्धार्थ को पूर्ण वैभव के साथ पुष्पित और पल्लवित करना शुरू किया। इस बात का पूर्ण प्रयास किया गया कि सिद्धार्थ को किसी प्रकार के दु:ख का एहसास न हो। वयस्क होने पर यशोधरा नामक सुन्दर कन्या से उसका विवाह कर दिया, जिससे उसे एक पुत्र रत्न की प्राप्ति भी हुई। जिस रात्रि को सिद्धार्थ के पुत्र जन्म की खुशी का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया, उसी रात्रि को सिद्धार्थ राजसी वैभव का परित्याग कर सन्यासी बनकर जंगल में चले गए। कठोर साधना के बाद चिंतन और मनन के मार्ग का अनुसरण किया। अन्त में उन्हें 'बुद्धत्व' प्राप्त हो गया। वे संसार के दु:खों का कारण और निवारण का उपाय खोजने में सफल हो गए। संसार के सभी प्राणी उनकी वन्दना करने लगे।

यदि सिद्धार्थ राजसी वैभव का आनन्द लेते तो संभवत: उनके देहावसान के साथ ही उनका सारा खेल भी खत्म हो जाता। किन्तु उन्होंने राजसी वैभव का परित्याग करके एक ऐसे मार्ग का अनुशीलन किया, जिसके परिणाम स्वरूप आज वे कइयों के लिए आराध्यदेव बन गए हैं। सारी दुनिया में लोग उन्हें श्रद्धा एवं महान दृष्टि से देखते हैं। यह त्याग और तपस्या का प्रतिफल है।

एक फकीर वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान करता था। वह प्रतिदिन एक लकड़हारे को लकड़ी काटकर ले जाते हुए देखता था। कड़ी मेहनत के बावजूद बड़ी मुश्किल से वह अपने परिवार का पालन-पोषण कर पाता था। एक दिन फकीर को उस पर दया आ गई। वह लकड़हारे को कहने लगा -'तू दिनभर लकड़ी काटता है, इतना परिश्रम करता है, फिर भी दो समय का भोजन नहीं जुटा पाता। तू कुछ दूर आगे जा, वहाँ चंदन का जंगल है, एक दिन लकड़ी काटेगा तो सात दिन का भोजन

आसानी से खा सकेगा।' लकड़हारे ने सोचा कि वैसे तो यह फकीर मेरे से अधिक जंगल के बारे में क्या जानता होगा, मैंने अपनी पूरी ज़िन्दगी जंगल में ही व्यतीत कर दी है। फिर भी फकीर की बात को मानकर जंगल में कुछ आगे जाने में हर्ज ही क्या है? यह सोचकर वह जंगल में आगे की ओर गया, जहाँ उसे चंदन का वन मिला। वहाँ से लकड़ी काटकर लाने में एक बार में सात दिन का भोजन आसानी से मिलने लगा। लकड़हारा खुश था। उसने फकीर को धन्यवाद दिया। अब लकड़हारे की ज़िन्दगी आराम से चलने लगी। कुछ दिनों बाद फकीर ने लकड़हारे को बुलाकर कहा - 'मैंने तो सोचा था कि इस घटना से प्रेरणा लेकर तुम कुछ आगे की सोचोगे, अपनी बुद्धि से काम लोगे। क्या तुम जीवन भर लकड़ियाँ ही काटते रहोगे? कभी तुमने सोचा कि चंदन के वन के आगे चाँदी की खान है? आगे बढ़कर देखो, शायद तुम्हें चाँदी की खान मिल जाए।' फकीर की बात सुनकर लकड़हारा आगे बढ़ा। सचमुच में आगे जाने पर उसे चाँदी की खान मिल गई। वहाँ से वह एक दिन चाँदी लाता और छ:-आठ माह का गुज़ारा आसानी से चल जाता। शेष दिनों वह बेकार बैठा रहता।

कुछ दिनों बाद पुन: फकीर ने लकड़हारे से कहा - 'क्या तुम कभी अपनी अक्ल से काम लोगे अथवा मेरे भरोसे ही रहोगे? क्या हर बार मैं ही तुम्हें बताऊंगा? क्या तुमने कभी सोचा है कि चाँदी के आगे सोने की खान हो सकती है?' फकीर की बात को सुनकर लकड़हारा आगे बढ़ा तो उसे सोने की खान मिल गई। इसके बाद उसे फकीर ने हीरों की खान भी बता दी। लकड़हारे को अपार सम्पदा मिल गई। वह अमीर हो गया। ऐशो-आराम की ज़िन्दगी बसर करने लगा। वह भूल गया था कि किसी फकीर ने उसे इस मुकाम तक पहुँचाया था। लकड़हारा महल में रहने लगा। एक दिन घूमते-घूमते फकीर उसके दरवाज़े तक आ पहुँचा। फकीर ने लकड़हारे को आवाज़ लगाई। बड़े अनमने भाव से वह बाहर आया और कहने लगा - 'अरे भाई! अब मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? क्या हीरों से आगे भी कुछ है?' फकीर बड़ी मस्ती में बोला - 'हीरों के आगे मैं हूँ, मेरी मस्ती है। क्या तुमने कभी सोचा कि जिसे चंदन, चाँदी, सोना और हीरों का पता था, वह उन्हें छोड़कर बैठा है? वह उन्हें बटोरने का प्रयास नहीं कर रहा है। इसका अभिप्राय यही है कि इनसे भी अधिक मूल्यवान कुछ और भी हो सकता है।' लकड़हारा फकीर की बात सुनकर उनके चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा - 'मुझे तो यह आभास भी नहीं हुआ कि आपके पास हीरों से भी बेशकीमती धन है।'

अपने अंतर्मन को टटोलने पर आपको अनमोल रत्न मिल जायेंगे। वैभव से बढ़कर त्याग का जीवन है। जिसने त्यागमय जीवन अपनाया उसका जीवन धन्य हो गया। जीवन में धन, सम्पदा, वैभव प्राप्त कर लेना ही सबकुछ नहीं। बल्कि अगर मनुष्य जन्म मिला है, तो उन सूक्ष्म और महान चीज़ों को पकड़कर उस महानता के कार्य के लिए हिम्मत बढ़ाना चाहिए। तब ही हम कइयों के लिए जीवन के राहगीर व शांति के प्रदाता बनेंगे। ये बात हमें तब समझ में आती है, जब हम अपने अंतर्मन को टटोलते हैं। टटोलने पर पाते हैं कि हमारे में तो असीम शक्तियाँ छिपी हुई हैं, तो यदि उस तरफ हम ध्यान देते हैं, तभी परमात्मा प्रदत्त हमारा मनुष्य जीवन सार्थक व महान बन सकता है।

सिधी-म.प्र.। 'अलविदा तनाव शिविर' के अवसर पर शिविरार्थियों को तनाव से मुक्त होने की विधियाँ बताते हुए ब्र.कु. पूनम बहन।

सिलिकॉन वैली-मिलपिटास(यू.एस.ए.)। दिवाली पर्व पर 'एक समय आ रहा है जब हम एक दूसरे के साथ आएं और अपने अंदर एक लाइट जगाएं जिससे हम हल्केपन व आनंद का अनुभव कर सकें' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. कुसुम तथा गणमान्य लोग।

सिसवा बाज़ार-उ.प्र.। वित्त राज्यमंत्री शिवप्रताप शुक्ला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मनोज बहन।

लाखनी-महा.। 'स्वर्णिम संस्कृत भारत निर्माण में कलाकारों का योगदान' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु.कुसुम, अधीक्षक चंद्रशेखर चकाने, डॉ. पोरकर, ब्र.कु.दयाल, ब्र.कु.सतीश, ब्र.कु. उषा तथा अन्य।

नवॉशहर-पंजाब। पद्मश्री संत बलवीर सिंह जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राम तथा पर्यावरण सम्भाल सोसायटी के सदस्य रामधन जी।

रेवाली-झारखण्ड। दीपावली के शुभ अवसर पर दिवाली पर्व का आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट करते हुए ब्र.कु.राजमति। साथ हैं प्रसिद्ध व्यवसायी पूर्णिमा चौधरी।

तोशाम-हरियाणा। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में श्रीलक्ष्मी, श्रीसरस्वती तथा श्री गणेश की चैतन्य झाँकी के साथ ब्र.कु.मंजू।